भारतीय ज्योतिष में संगीत का प्रयोगात्मक अध्ययन

शोध पत्र शीर्षक भारतीय ज्योतिष शास्त्र में संगीत का प्रयोगात्मक अध्ययन को स्पष्ट करने के लिए इन दोनों विषय के बारे में जानना आवश्यक हैं, ज्योतिष शास्त्र भारतीय ज्योतिष शास्त्र उस विद्या का नाम है, जिसके द्वारा आकाशीय ग्रहों के माध्यम से भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों आयामों का हाल जाना जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र को प्रकाश देने वाला शास्त्र भी कहा जाता है। इस शास्त्र में सौर मण्डल में सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ब्रह्माण्डीय पिण्ड जैसे राशि नक्षत्र आदि का अध्ययन संसार के सूख, दुख, जीवन–मरण एवं ब्रह्माण्ड के अंधकाराच्छन्न के लिए किया जाता है।

इस शास्त्र द्वारा ग्रहों की गति, राशि व नक्षत्र का प्रभाव का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः हम कह सकते है कि

"ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्"
संगीत – "सम्यक प्रकरण यह गीतये तत्संगीतम्"

अर्थात् गीत वाद्य तथा नृत्य इन तीनों का आधार स्वर तथा लय है स्वर तथा लय नाद के परिष्कृत रूप है कि ये तीनों लय (विलम्बीत), मध्य, तीव्र संगीत के अन्तर्गत मान्य है।

इन तीनों तत्वों में गीत की उपयोगिता की प्रधानता है। क्योंकि गीत संगीत में प्रयुक्त स्वर और लय, शब्द का योग है। अतः यह सिद्ध हो जाता है कि भारत का प्राचीन तीन शास्त्रों में एकत्र है ऐसा कहा जाता है। ये तीन शास्त्र है –

1. भारतीय ज्योतिष शास्त्र अर्थात् गणित
2. भारतीय वैद्यक शास्त्र अर्थात् आयुर्वेद
3. भारतीय संगीत शास्त्र अर्थात् नादयोग

भारतीय ज्योतिष के अनुसार हमारे नौ ग्रह मानव जीवन में उसके शुभ या अशुभ स्थिति को प्रभावित करते है सृष्टि के चक्र 9 ग्रह 12 राशियाँ एवं 27 नक्षत्र है हमारे पंचमहाभूत सात धातु एवं त्रिदोष से प्रभावित होता है इसका कारण यह है कि भारतीय संगीत के मुख्य तत्व दो प्रकार के है – 1. आहत 2. अनाहत
'अनाहत' नाद वह है

जिसका उपयोग संगीत में नहीं होता तथा आहत नाद का संगीत में प्रयोग होता है। दोनों प्रकारों के नादों की उत्पति में अन्तर का मूल आधार ध्वनि आन्दोलन में निहित है। यदि ध्वनि आन्दोलन का कम्पन अनियमित हो तो तदुद्रभूत नाद संगीतोनुपयोगी होगा एवं ध्वनि आन्दोलन नियमित युक्त हो तो नाद संगीतपयोगी होगा। इस प्रकार गति अथवा लय संगीत की पहली भित्ति है। अपितु समस्त जीवन उसी पर अविलम्बित है। समस्त प्रकृति वस्तु जगत् गतिमान है। उदाहरण के तौर पर खगोल विज्ञान में आने वाले ग्रह एक नियमित गति में विचरण करते है। इस नियमित गति या भ्रमण के समय विशिष्ट प्रकार की ध्वनि का निर्माण करते है। और उन ध्वनियों के मिश्रण से एक प्रकार के संगीत का निर्माण होता है। इस आधार पर नक्षत्र–नाद मनुष्य के जन्म के समय चित्त या मन पर अंकित हो जाता है। वस्तुतः वह उसका जीवन वाद्य और जीवन–संगीत होता है। इस आधार पर यह प्रविधान निकाला कि भारतीय ज्योतिष एवं भारतीय संगीत दोनों परस्पर पूरक है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र की भाषा में जातक की राशियों के आधार पर जातक में जातक की राशियों के आधार पर जातक का स्वर लगाव उसकी जन्मपत्री के आधार पर निकाला गया। सर्वेक्षण विधि के आधार पर रागों के समय चक्र में आने वाले रागों को, समय के आधार पर (24 घण्टों को 2–2 के अनुपात में बाँटकर जातक को सुनाया इस विधि द्वारा जातक के नाम, समय, स्थान को ज्ञात करके कुण्डली को माध्यम बनाकर उस जातक की दीन चरियों को प्रभावित करने वाले स्वरों के गीत या धुन सुनाकर जातक के जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

फलित ज्योतिष ज्ञान के लिए तिथि, नक्षत्र, योगकरण (समय) एवं वार इन पाँच अवयवों के बारे में प्रारम्भिक जानकार परमावश्यक है। इन पाँचों अवयवों से मिलकर 'पंचाग' शब्द बना है।

इन पाँचों अवयवों का आवश्यक विवरण में कुण्डली के लिये तिथिकरण आवश्यक है। ज्योतिष शास्त्र के सात ग्रह तथा संगीत के 12 स्वर तथा 12 राशियों में आपसी सम्बन्ध है।

खगोलशास्त्र के ज्यातिष शास्त्र के अवयव, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा की आपसी परिक्रमा से ही मानव जीवन चलता है। सूर्य, पृथ्वी व चन्द्रमा की कला से कुछ भी परिवर्तन होने से मानव जीवन में भी परिवर्तन होता है। उसी प्रकार संगीत में प्रयुक्त होने वाले स्वरों से मानव के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

पं. कमल भारद्वाज द्वारा सामवेद में स्वर–राशि ग्रह की गणना

की है। उन्होंने प्रत्येक मानव शरीर के व्यवहार परिवर्तन के तत्वों जैसे मन, बुद्धि, हृदय, रक्त, आत्मा, वात, वित, कफ आदि स्वर स्वरों के स्थान को बताये हुए बताया की। (साक्षात्कार)

12 राशियों, 9 ग्रह तथा 12 स्वरों का समय, प्रवृत्ति के आधार पर, स्वर के लगाव पर, प्रयुक्त करने के आधार पर अरविन्द, जिन्द्रगड़कर द्वारा कुण्डली में 12 स्वर, 9 ग्रह, 12 राशियों को इस तरह दर्शाया

	ग्रह	राशि	स्वर
1	श्रवि	सिंह	सा
2	चन्द्र	कर्क	प
3	मंगल	मेष वृश्चिक	म शुद्ध म तीव्र
4	बुध	मिथुन कन्या	रे शुद्ध रे कोमल
5	गुरू	धनु मीन	ध शुद्ध ध कोमल
6	शुक्र	वृषक तुला	ग शुद्ध ग कोमल
7	शनि	मकर कुंभ	नि शुद्ध नि कोमल

कुण्डली

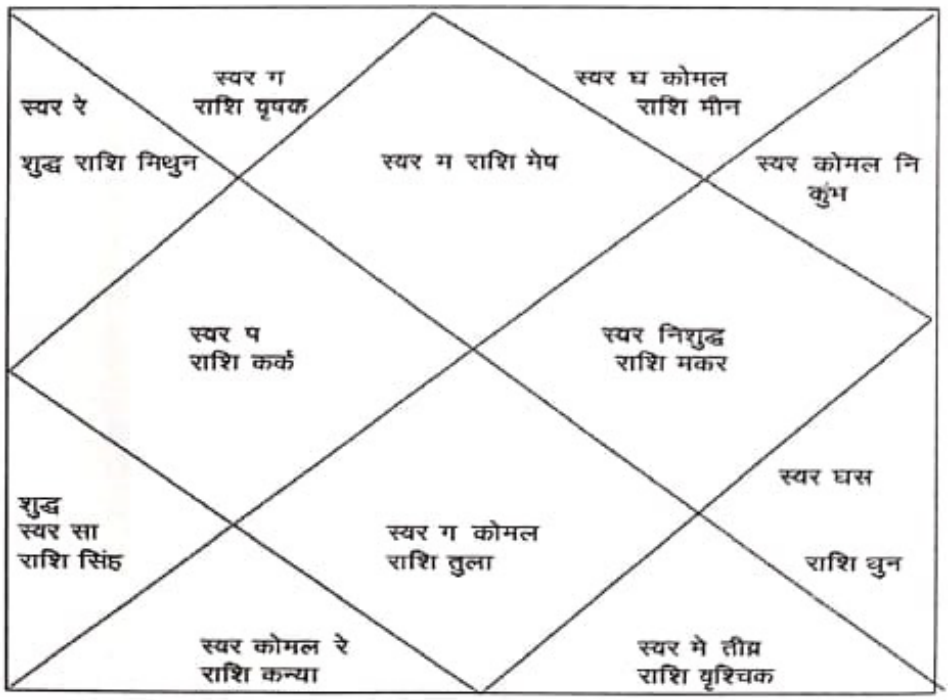

जातक जब जन्म लेता है तभी से संगीत व ज्योतिष विद्या उसके साथ जन्म लेती है। संगीत में भी समय का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। समय के आधार पर 12 स्वरों का अध्ययन करके मानव जीवन को सुखद बनाया जा सकता है। जिस तरह ज्योतिष शास्त्र में 24 घण्टों को दो–दो भागों में वोट कर 12 भाग बनाये है। उसी संगीत में स्वरों को गाने के लिए या हम किस समय कौन सा स्वर ज्यादा प्रभावी होगा, इसके लिए संगीत के 12 स्वरों का प्रयोग किया गया है। अतः हम कह सकते हैं –

The time of a native is of vital importance to make various calculation and prediction. Every astrology will take the placement of planets and on the time and place of birth.

ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के आधार पर ग्रहों की दशा व अन्तरदशा हर 2 घण्टे में परिवर्तन होती है। पूरे 24 घण्टे में 12 लग्न होते हैं। सूर्य प्रतिमाह एक राशि में रहता है। हर माह की 15 तारीख को सूर्य राशि बदलता है। इस कारण मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन निश्चित है। 2 घण्टे का लग्न होता है।

इस आधार पर प्ज्ॅदहममज तमेमंतबी बंकमउल ने रागों के समय चक्र को एक दिन में आने वाले 24 घंटों को 2–2 घंटों के अनुपात में बाँटा जो Music therapy based of in dividends Biological humor with reference to medical astrology पर आधारित था –

ज्योतिष व संगीत का सम्बन्ध है किन्तु राग समय चक्र के समय सिद्धान्त तथा जातक के समय सिद्धान्त के अनुपात के आधार पर निम्न समय में अमुख स्वर तथा उन स्वरों की राग व समय के आधार पर प्रभाव डालने वाली राशि, ग्रह इस प्रकार है।

क्र.सं. समय राग वादी स्वर सम्वादी राशि ग्रह

क्र. सं.	समय	राग	स्वर वादी	सम्वादी सम्वादी	राशि	ग्रह
1.	12.00 Midnight to 02.00 AM (रे प म सां)	1) दरबारी कान्हड़ा	–रे	प	मिथुन–कक	बुध
		2) मालकौंस	म	सा	मेष–सिंह	मंगल, रवि
		3) अड़ाना	प	सां	कर्क–सिंह	चन्द्र
2	02.00 AM to 04.00 AM (ध ग प सां)	1) सोहनी	ध	ग	धनु–वृषभ	गुरु–शुक्र
		2) परज	सा	प	सिंह–कर्क	रवि–चन्द्र
3	04.00 AM to 06.00 AM (म प सां)	1) ललित	म	सा	मेष–सिंह	मंगल–रवि
		2) भटियार	सा	प	सिंह–कर्क	रवि–चन्द्र

4	06.00 AM to 08.00 AM (ध रे)	1) भैरव	ध	रे	मीन–कन्या	गुरु–शुक्र
		2) रामकली	सां	प	मीन–कन्या	गुरु–शुक्र
5	08.00 AM to 10.00 AM (ध ग म सां)	1) बिलासखानी तोड़ी	ध	ग	मीन–तुला	गुरु–शुक्र
		2) अहिर भैरव	म	सा	मेष–सिंह	मंगल–रवि
6	10.00 AM to 12.00 Noon (ध ग ध ग)	1) भैरवी	ध	ग	मीन–तुला	गुरु–शुक्र
		2) देशकार	ध	ग	धनु–वृषभ	गुरु–शुक्र
		3) अल्हैया बिलावल	ध	ग	धनु–वृषभ	गुरु–शुक्र
		4) जौनपुरी	ध	ग	मीन–तुला	गुरु–शुक्र
7	12.00 Noon to 02.00 PM (रे प)	1) सारंग अंग	रे	प	मिथुन–कर्क	बुध–चन्द्र
8	02.00 PM to 04.00 PM (म प सां)	1) भीमपलासी	म	सां	मेष–सिंह	मंगल–रवि
		2) मुलतानी	प	सां	मेष–सिंह	चन्द्र–रवि
9	04.00 PM to 06.00 PM	1) पूर्वी	ग	नि	वृषभ–मकर	शुक्र–शनि
		2) श्री	रे	प	मिथुन–कर्क	बुध–चन्द्र

	(रे ग प नि सां)					
		3) पटदीप	प	सा	कर्क–सिंह	चन्द्र–सिंह
10	06.00 PM to 08.00 PM (धग नि म तीव्र)	1) कल्याण	ध	ग	धनु–वृषभ	गुरु–शुक्र
		2) पूरिया	ग	नि	वृषभ–मकर	शुक्र–शनि
		3) हमीर	ध	ग	धनु–वृषभ	गुरु–शुक्र
11	08.00 PM to 10.00 PM (रे प मं सां नि)	1) देश	रे	प	मिथुन–कर्क	बुध–चन्द्र
		2) केदार	म	सा	मेष–सिंह	मंगल–रवि
		3) दूर्गा	रे	प(म सा)	मिथुन–कर्क	बुध–चन्द्र
		4) जयजवन्ती	रे	प	मिथुन–कर्क	बुध–चन्द्र
12	10.00 PM to 12.00 Midnight (ग म नि सा)	1) बिहाग	ग	नि	वृषभ–मकर	शुक्र–शनि
		2) बागेश्री	म	सां	मेष–सिंह	मंगल–रवि

इस आधार शोधार्थी ने प्जबॅदहमज त्मेमंतबी ।बंकंउल द्वारा दिये ज्ञय समय चक्र तथा अरविन्द जी व कमल जी द्वारा दिये सिद्वान्त का अध्ययन करके राग–ग्रह–राशि–स्वर (वादी–सम्वादी) का चक्र बनाया तथा प्रयोगात्मक विधि द्वारा रागों के स्वर के द्वारा संगीत चिकित्सा की जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

शोधार्थी ने इस सकारात्मक प्रभाव को देखने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया कि जन्म राशि (अक्षर के आधार) जन्म समय पर चन्द्रमा जिस स्थान पर होता है। व जातक की जन्म राशि कहलाती है। हर राशि व ग्रह का स्वर होता है। तथा लग्न कुण्डली समय व सूर्य के स्थान को देखकर निकाली जाती है। तथा समय कुण्डली जातक के जन्म समय तथा राग के समय चक्र को 2–2 घण्टे के अनुपात पर रागों को बाँटकर जातक को सुनाया। इस आधार पर मनुष्य की दिन चरिया पर समय के आधार पर आये स्वरों से बने उपशास्त्रीय संगीत सकारात्मक प्रभाव पड़ा सर्वेक्षण के लिए न्यादर्श संख्या 15 तथा वर्ग 4 लिये जैसे बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था प्रोढ़अवस्था के लोग लिए।

इन वर्गों के समूह से संगीत अभिरूचि को जानने के लिए प्रश्नोत्री तैयार की गई जिसमें मनुष्य की दीन चरिया को लेके प्रश्न पूछे। ये इस वर्ग में 12 राशियों के बाद ज्ञात हुआ कि हर राशि हमारे किसी ना किसी शारीरिक अंग का प्रतीक होती है। तथा मनुष्य के नाम के अक्षर पर आई राशि उस अंग पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव डालती है जैसे –

1.	मंगल	मेष	सिर i. BP, dipression ii. Mygrain iii. माँसपेशियों का नसों का फुलना iv. पागलपन अनिद्रा v. गुस्सा vi. चिड़चिड़ापन vii. जिद्दी
2.	शुक्र	वृष	मुख से होने वाली परेशानी प इन्द्रियों में परेशानी
3.	बुध	मिथुन	भुजा में तकलीफ
4.	चन्द्र	कर्क	जिगर
5.	सूर्य	सिंह	हृदय
6.	बुध	कन्या	उदर
7.	शुक्र	तुला	गुर्दा
8.	मंगल	वृश्चिक	गुप्तांश
9.	बृहस्पति	धनु	धनु
10.	शनि	कुंभ	पिण्डली
11.	बृहस्पति	मीन	पैर
12.	शनि	मकर	टकना में

सर्वेक्षण विधि के आधार पर शोधार्थी ने शोधप्रबन्ध में 60 लोगों पर राग समय चक्र में प्रयुक्त रागों को समय 24 घण्टों को 2–2 घण्टे के अनुपात पर रखकर उस समय गाये जाने वाले रागों में प्रयुक्त वादी संवादी स्वर का अधिक प्रयोग करते हुऐ गीत संगीत न्यादर्श में प्रयुक्त 60 लोगों को 1 सप्ताह सुनाया, तथा अवलोकन किया। सर्वेक्षण के उपरान्त पूछने पर आई परेशानी अथवा रोगों को राग–समय–पंचाग सिद्धान्त के आधार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा इस सकारात्मक प्रभाव को समय कुण्डली के आधार पर प्रस्तुत किया।

शोध पत्र में न्यादर्श संख्या का सर्वेक्षण प्रदर्शित करना मुश्किल है। इसलिए उदाहरण के तौर पर एक न्यादर्श का उदाहरण देकर शोध शीर्षक को समझाने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया। शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को पूर्ण करने के लिए न्यादर्श वर्ग के लोगों से कुछ निम्न तथ्यों को एकत्रित किया।

नम – नव्या पारीक
स्थान – उदयपुर
समय – सायं 6: 40
दिनांक – 25–02–2011
वार – गुरूवार
तिथि – अश्टमी
नक्षत्र – अनुराधा
करण – सुवर
योग – हर्शना
उपरोक्त तथ्य के आधार पर –

1. जन्म नाम (अक्षर के आधार) पर व जन्म वाले दिन चन्द्र कौन सी राशि में है। इस आधार पर जन्त राशि नकाली गई है। इसके अनुसार वृश्चिक राशि आई जिसका स्वर म तीव्र है तथा इस राशि का ग्रह मंगल होने के साथ–साथ इस राशि का कुण्डली में स्थान 8वीं है।

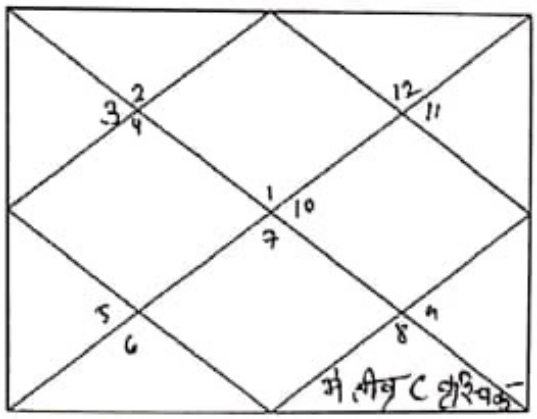

2. जातक के जन्म समय के आधार पर सूर्य स्थान लग्न स्थान निकाला जाता है। इस आधार पर कुम्भ राशि निकाली गई। इस राशि का स्वर कोमल निपद है।

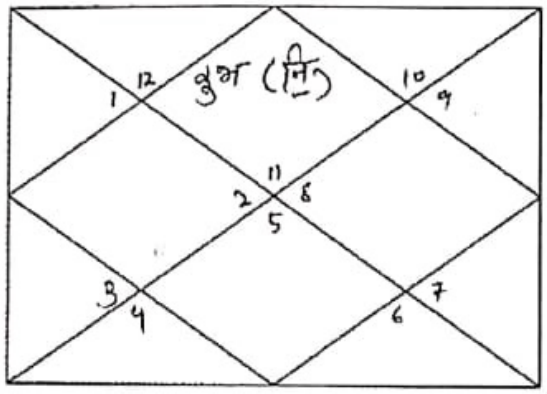

3. जन्म समय 6:40 सायं के अनुसार भोधार्थी ने राग समय चक्र के 2–2 घण्टे के अनुपात के अनुसार को देखे तो 6:40 से 8:00 बजे सायं समय समूह में प्रयुक्त होता है। इस समय गाये गये राग निम्न है।

1. पूरिया ध ग
2. कल्याण ग नि
3. हमीर ध ग

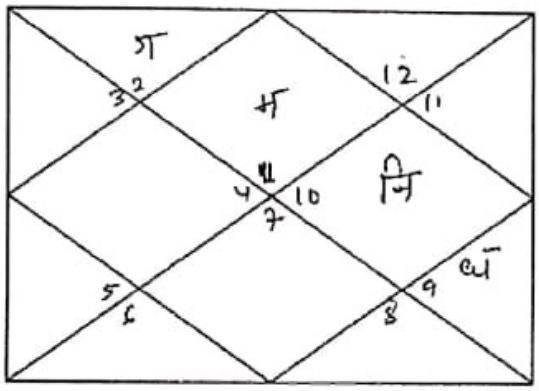

इन वादी सम्वादी स्वर समूह का प्रयोग होने वाले उप भाास्त्रीय संगीत जातक को सुनाये।

निष्कार्ष–

1. जन्म राशि वृश्चिक के आधार पर (म) तीव्र स्वर आया
2. लग्न राशि कुम्भ के अनुसार नि कोमल स्वर आया
3. राग समय चक्र के समय समूह के आधार पर 6:00 से 8:00 सायं तक (ध ग नि) स्वर आये जो कि कल्याणं अंग में आने वाले राग को दर्शाते है।

1 राग कल्याण 2 हमीर 3 पूरिया 4 यमन

अतः भोधार्थी ने तीनों वर्गो के समूह के आधार पर बने स्वर के बने गीतों को जातक को एक सप्ताह सुनाया और जातक में आये परिवर्तन का अवलोकन किया। जिसके आधार पर पाया कि जातक के व्यवहार में आमुख परिवर्तन आये।

अतः जिस व्यक्ति की चन्द्र राशि कुण्डली में वृश्चिक हो लग्न राशि कुण्डली में कुम्भ राशियां हो तथा नि कोमल स्वर हो तथा समय कुण्डली में (ध म ग नि) स्वर हो तो उसको कल्याण अंग के रागों को सुनान से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अतः हमारी प्राकल्पना जातक के चन्द्र कुण्डली के आधार पर वृश्चिक राशि का में स्वर, लग्न कुण्डली के आधार पर कुम्भ राशि नि स्वर तथा समय कुण्डली के आधार पर (ध्रस, मे, ग, नि) स्वर पर जातक पर सकारात्मक प्रभाव की स्वीकृत होती है। स्वर पर आधारित राग आदि सुनाये जाये जो जातक के व्यवहार में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिन्हा, डॉ. ज्योति, संगीत प्रवाह–ओमेगा पब्लिकेशन च्ह (87–111) नई दिल्ली
2. चौधरी, सुभाष रानि, – संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धान्त कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स
3. जोशी, पं. केवल आनन्द – राशि, नक्षत्र और मुहूर्त विज्ञान मनोज पब्लिकेशन
4. शास्त्री – पं. सुरेश कुमार 1991 – ज्योतिष शास्त्र क्लासिक पब्लिकेशन हाऊस जयपुर
5. शास्त्री, नेमिचन्द्र – भारतीय ज्योतिष भारतीय ज्ञानपीठ
6. सिंह खन्ना, जतिन्द्र – 1996 – नाद और संगीत अभिषेक पब्लिकेशन्स चंडीगढ़
7. जोशी, डॉ. भानु प्रकाश, कुमार, डॉ. कामाख्या – 2009 – योग रहस्य स्टैण्डर्ड पब्लिशर्स (इण्डिया) नई दिल्ली
8. काव्यायन, महर्षि अभय – 2008 – श्री रामचन्द्र सोमया – जिप्रणीतः समरसारः चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
9. पाराशर – सं. अश्विनी, 2009, कीरो नक्षत्र – विज्ञान डायमंड बुक्स (प्रा. लि.) नई दिल्ली
10. भारतीय ज्योतिष – चिकित्सा – विज्ञान (निदान प्रकर) आचार्य उमेश शास्त्री यूनिक इडर्स जयपुर / 2007

मैगज़ीन

1. अखण्ड ज्योति / मई 1997 स्थायी मिलन का रहस्य पेज 4–6
2. संगीत पत्रिका – 2000 / पेज – 3–6 संगीत के ग्रन्थों में वर्णित मूलतत्व 'नाद' एक 'अवलोकन' (नीता मिश्रा)
3. 2003 फरवरी पेज – 6–13 संगीत पत्रिका संगीत और ज्योतिष अर्थात् सांगेतिक ज्योतिष
   वाणी प्रकाशन समाचार
   फ्युचर समाचार पत्रिका सन् – 2008 मई

गरिमा पारिक
शोध छात्रा

प्रो. ईना शास्त्री
ललित कला संकाय